#शिक्षागिरी

7 मार्च 2017

नई दिल्ली

शिक्षागिरी पैनल के सदस्य

पैनल के सदस्य

अरीबा: 18 साल की अरीबा अपने माता–पिता और दो भाइयों के साथ दिल्ली के आदर्श नगर इलाके में रहती हैं. उनका ताल्लुक मुस्लिम समुदाय से है. अरीबा साल 2015 में 11वीं कक्षा की परीक्षा में नाकाम हो गई थीं. इसके बाद उन्होंने स्कूल छोड़ दिया था. उन्हें इस वजह से दोस्तों के उलाहनों का शिकार होना पड़ता था. इम्तिहान में फेल होने का लांछन झेलना अरीबा के लिए आसान नहीं था. उनका परिवार आर्थिक तंगी का शिकार था. इसके चलते परिवार के सदस्य उनकी पढ़ाई जारी रखने के खिलाफ थे. रूढ़िवादी मानसिकता के कारण परिवार को उनका अकेले सफर करना भी पसंद नहीं है. वो अक्सर अपने उन दोस्तों को देखा करती थीं जो करियर को कामयाबी से आगे बढ़ा रहे थे. उन्हें तमाम कठिनाइयों के बावजूद पढ़ाई जारी रखने की प्रेरणा मिली. अरीबा ने युवा शिक्षा केंद्र की मदद से 12वीं क्लास में ओपन स्कूलिंग के तहत दाखिल लिया. उनका लक्ष्य अध्यापक बनना है. अरीबा के मुताबिक स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद वो कॉलेज में नाम दर्ज कराएंगी. साथ ही अध्यापन में करियर बनाने के लिए तैयारी करेंगी.

अरमानी: 17 साल की अरमानी दिल्ली के जहांगीरपुरी इलाके की रहने वाली हैं. वो अपने माता–पिता, दो भाइयों और तीन बहनों के साथ रहती हैं. अरमानी फिलहाल 10वीं क्लास की छात्रा हैं. उनके अभिभावक उन्हें पढ़ाना नहीं चाहते. अरमानी को घर से स्कूल की फीस तक नहीं मिलती. वो कहती हैं कि मां को उनकी जरा भी परवाह नहीं होती. बाकी भाई–बहनों के मुकाबले उन्हें भेदभाव का शिकार होना पड़ा। अरमानी फीस का पैसा जुटाने के लिए सब्जी मंडी में काम करती थीं. लेकिन ये रोज़गार भी छूटने के बाद उन्हें पैसों की भारी किल्लत का सामना पड़ता है. फिलहाल अरमानी जहां पढ़ती हैं, वहां उनकी फीस माफ है. उनका सपना एक दिन पुलिस अफसर बनने का है. वो फिल्म 'दुर्गा' से प्रेरित हैं, जिसकी नायिका भी पुलिस अफसर है।

अमन: 16 साल के अमन एक प्रवासी दलित परिवार से ताल्लुक रखते हैं. बुरी संगति के असर में उन्होंने नवीं क्लास के बाद स्कूल छोड़ दिया था. अमन के ज्यादातर दोस्त उम्र में उनसे बड़े थे. उनके साथ रहकर अमन शराब और सिगरेट की लत का शिकार हो गये. धीरे–धीरे पढ़ाई–लिखाई में उनकी दिलचस्पी खत्म होती गई. अमन अक्सर स्कूल से भागकर दोस्तों के साथ आवारागर्दी करते. परिवार के सदस्यों के साथ भी उनका बर्ताव बेरुखी भरा था. इस वजह से माता–पिता ने भी अमन को नज़रअंदाज करना शुरू कर दिया. यूथ टेक हब (ल्ज्भ) के संयोजक से मिलने के बाद उन्हें शिक्षा की अहमियत का ऐहसास हुआ. अमन ने महसूस किया कि उनके दोस्तों की आमदनी ख़ास नहीं थी. उनमें से ज्यादातर के पास सम्मानजनक रोज़गार नहीं था. ये देखकर अमन इस नतीजे पर पहुंचे कि उन्हें आगे पढ़ना चाहिए. अब उन्होंने इसी साल नवीं कक्षा में ओपन स्कूलिंग के तहत दाखिला लेने का फैसला किया है. गायक बनने की ख्वाहिश रखने वाल अमन पूरी दुनिया घूमना चाहते है।

आशीष: 17–साल के आशीष दिल्ली के करोलबाग इलाके में रहते हैं. उनके परिवार में माता–पिता के अलावा बड़ी बहन, दादी और रिश्ते का एक भाई भी शामिल है. आशीष का ताल्लुक वाल्मीकि समुदाय से है. नवीं कक्षा में लगातार 2 बार फेल होने के बाद आशीष ने पढ़ाई छोड़ दी थी. उनके स्कूल में गणित और विज्ञान अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाए जाते थे. इस भाषा पर पकड़ ना होने की वजह से वो इन विषयों को ठीक तरीके से समझ नहीं पाते थे. दूसरी बार नवीं क्लास में बैठने पर टीचर और साथी छात्र उन्हें चिढ़ाते थे. इससे आशीष का हौसला पस्त हो गया और उन पर बेहतर प्रदर्शन का दबाव बढ़ गया. हालांकि इस दौरान आशीष को परिवार का पूरा समर्थन मिलता रहा. उनकी बड़ी बहन यूथ टेक हब जाया करती थी. उसी ने आशीष को ओपन स्कूल की सुविधा के बारे में बताया. आशीष ने बहन के कहने पर दाखिले का फॉर्म भरा. इस काम में संयोजक ने भी उनकी मदद की. अब आशीष ओपन स्कूल में दसवीं कक्षा की पढ़ाई कर रहे हैं।

आजादः ये दिल्ली के आदर्शनगर में माता–पिता के साथ रहते हैं. उनके परिवार में कुल तीन भाई–बहन हैं. आजाद ने बारहवीं क्लास में बोर्ड की परीक्षा से पहले पढ़ाई छोड़ दी थी. खराब माली हालत से जूझ रहे परिवार की आर्थिक मदद के इरादे से उन्होंने नौकरी कर ली. इस फैसले के पीछे संगति का दबाव भी एक वजह थी. आजाद अक्सर अपने दोस्तों को पैसा कमाते देखते थे और आखिर में उन्हीं के नक्शे कदम पर चलने के लिए स्कूल को विदा कह दिया. बाद में एक अध्यापक ने उन्हें 12वीं की परीक्षा देने की प्रेरणा दी. आजाद इम्तिहान में पास हो गए. अब वो दिल्ली यूनिवर्सिटी में बी.ए. की डिग्री हासिल कर रहे हैं. आजाद मानते हैं कि उनका मार्गदर्शन करने वाला कोई नहीं था. ऐसा कोई शख्स, जो उन्हें बेहतर भविष्य के लिए शिक्षा की अहमियत समझा सके. अब सही रास्ते पर आने के बाद वो एक कामयाब कारोबारी बनना चाहते हैं. आजाद पूरी दुनिया में घूमकर नई तकनीकों की जानकारी हासिल करना चाहते हैं ताकि उन्हें भारत में भी ला सकें.

भरतः 20 साल के भरत दिल्ली के पटेल नगर में माता–पिता के साथ रहते हैं. उन्होंने नवीं क्लास से ही स्कूल जाना छोड़ दिया था. वो एक सरकारी स्कूल में पढ़ते थे. उनके अध्यापक छात्रों के साथ सम्मानजनक व्यवहार नहीं करते थे. पढ़ाई से जुड़ी छात्रों की शंकाएं सुलझाने में भी उनकी कोई दिलचस्पी नहीं होती थी. इस वजह से भरत पढ़ाई से उकता गए और एक दिन स्कूल छोड़ने का फैसला किया. आज भरत को ऐहसास है कि स्कूल में सही माहौल ना मिलने की वजह से ही वो शिक्षा में पिछड़ गए. वो बताते हैं किस तरह सरकारी स्कूलों की जर्जर व्यवस्था बच्चों की विधिवत शिक्षा में आड़े आती है. उनकी राय में संगति का असर भी बच्चों को पढ़ाई–लिखाई से दूर करता है. उनका सपना संगीतकार या सेना में से किसी एक करियर में बुलंदी हासिल करने का है।

भवानीः 13 साल की भवानी दिल्ली के कुसुमपुर पहाड़ी इलाके में तीन बहनों के साथ रहती हैं. तमिल–मूल की भवानी अपनी बहनों में सबसे छोटी हैं. उन्होंने पिछले साल अक्टूबर में स्कूल छोड़ा था. उस वक्त वो आठवीं क्लास में थीं. बीमार मां की देखभाल के लिए घर में ही रहना उनकी मजबूरी थी. भवानी की मां का देहांत इस साल जनवरी में हुआ. अब वो दिल्ली के आश्रम इलाके में अपनी बहन के साथ बोर्डिंग स्कूल में दाखिला लेने वाली हैं. भवानी को अंग्रेजी पढ़ना पसंद है. वो एक दिन नृत्य की अध्यापिका बनना चाहती हैं।

एकताः 15 साल की एकता दिल्ली के करोलबाग इलाके की रहने वाली हैं. उनका ताल्लुक महादलित परिवार से है. एकता के घर में माता–पिता के अलावा दो और बहनें हैं. वो तीनों बहनों में मझोली हैं. एकता ने साल 2014 में स्कूल छोड़ा था. उस वक्त वो आठवीं क्लास में थीं. पांचवीं क्लास तक एक निजी स्कूल में पढ़ने वाली एकता जब छठी कक्षा में एक सरकारी स्कूल में भर्ती हुईं तो उन्हें काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा. सहपाठी उन्हें अश्वेत रंग को लेकर चिढ़ाया करते थे. एकता की मां ने स्कूल के प्रशासन से शिकायत की. लेकिन स्कूलवालों ने एकता को ही सभी परेशानियों के लिए जिम्मेदार ठहराया. इस वजह से एकता विद्यालय में अलग–थलग पड़ने लगीं. उन्होंने किसी तरह सातवीं क्लास पार की. लेकिन सहपाठियों के उलाहने और स्कूल में अकेलापन उनपर भारी पड़ने लगा. आखिरकार आठवीं क्लास में उन्होंने पढ़ाई ही छोड़ दी. 2 साल पहले एकता 'बाल सहयोग' नाम की गैर–सरकारी संस्था के संपर्क में आईं. इस अनुभव से उन्हें शिक्षा की महत्ता समझ में आई. संयोजक उन्हें यूथ टेक हब में ले गए और ओपन स्कूलिंग के ज़रिये दोबारा पढ़ाई शुरू करवाई. फिलहाल एकता दसवीं क्लास में हैं. उन्हें गीत गाना पसंद है. लता मंगेशकर उनकी पसंदीदा गायिका हैं. बड़े होकर एकता खुद भी गायिका बनना चाहती हैं।

करन: दिल्ली के पटेल नगर में रहने वाले करन की उम्र 21 साल है. वो एक दलित प्रवासी परिवार से संबंध रखते हैं. छह सदस्यों के परिवार में करन सबसे छोटे हैं. पढ़ाई में दिलचस्पी ना होने के चलते उन्होंने दसवीं क्लास से स्कूल जाना छोड़ दिया था. करन के मुताबिक वो क्लासरूम में कुछ भी समझ नहीं पाते थे. छठी क्लास में एक बार फेल होने के बाद उनका मनोबल वैसे ही गिर चुका था. फिर भी उन्होंने नवीं कक्षा तक जैसे–तैसे इम्तिहान पास किये. एक दिन उन्हें एक ऐसी संस्था के बारे में पता चला जो मुफ्त में अंग्रेजी सिखाती है. करन ने अंग्रेजी सीखना शुरू किया और कुछ दिन बाद स्वैच्छिक तौर पर मंजूरस्टाफ से जुड़ गये. पिछले साढ़े तीन साल से करन वहीं हैं. इस अरसे में उन्हें जीवन में शिक्षा की अहमियत भी समझ में आई. लिहाजा उन्होंने ओपन स्कूलिंग के तहत दसवीं क्लास में दाखिला लिया. फिलहाल वो बारहवीं कक्षा में पढ़ रहे हैं. करन महसूस करते हैं कि अगर स्कूल के अध्यापकों का प्रोत्साहन मिला होता तो वो एक मेधावी छात्र होते. उन्हें नाचना, गाना और पार्टियों में जाना पसंद है. करन भविष्य में एक उद्यमी बनना चाहते हैं।

मंजूर: 16 साल के मंजूर एक मुस्लिम–दलित परिवार से हैं. परिवार का गुजर–बसर निर्माण के काम में मजदूरी से होता है. मंजूर और उनका परिवार बिहार के एक छोटे से गांव में रहते थे. रोजगार की तलाश उन्हें दिल्ली के आदर्शनगर में अपने रिश्तेदार के घर ले आई. खराब आर्थिक हालात ने आठवीं क्लास में ही उन्हें स्कूल छोड़ने पर मजबूर कर दिया. परिवार की मदद के लिए उन्हें गांव से बाहर जाकर रोजगार खोजना पड़ा. गांव के स्कूल में मंजूर सबसे होनहार छात्रों में गिने जाते थे. यूथ टेक हब की मदद से उन्होंने दिल्ली में छठी क्लास में एडमिशन ली. लेकिन परिवार की आय में योगदान के लिए उन्हें दिनभर सब्जी मंडी में भी काम करना पड़ता था. इस वजह से रोज़ स्कूल जाना उनके लिए आसान नहीं था. मंजूर ने किसी तरह छठी और सातवीं क्लास तो पास की लेकिन आठवीं क्लास में काम और पढ़ाई के साथ तालमेल बिठाए रखना मुमकिन नहीं रहा. मंजूर का सपना है कि वो एक दिन क्रिकेट में देश का नाम रोशन करें।

संजना: 16 साल की संजना दिल्ली के कुसुमपुर पहाड़ी इलाके में रहती हैं. उनके परिवार में माता–पिता के अलावा दो और बहनें भी हैं. संजना ने दो साल पहले स्कूल छोड़ा था. उस वक्त वो नवीं कक्षा में थीं. उन्हें अपने दादा की मौत के बाद चार महीने के लिए पैतृक गांव जाना पड़ा था. लेकिन इसके लिए उन्होंने स्कूल में छुट्टी की अर्ज़ी नहीं दी. वापस लौटने पर स्कूल प्रशासन ने उन्हें दोबारा भर्ती करने से इनकार कर दिया. हालांकि संजना के पिता ने इसके लिए कई बार स्कूल अधिकारियों के सामने गुहार लगाई. अब संजना ओपन स्कूल से दसवीं की पढ़ाई कर रही हैं. उनके माता–पिता उन्हें पढ़ाने के पक्ष में हैं. संजना के पिता अपनी बेटी को नर्स बनते हुए देखना चाहते हैं।

शोएब अख्तर: 16 साल के शोएब अख्तर का ताल्लुक मुस्लिम समुदाय से है. उनके परिवार में माता–पिता के अलावा 2 भाई भी हैं. शोएब की बहन अब करोलबाग इलाके में रहती है. शोएब कोलकाता के एक स्कूल में पढ़ते थे. साल 2015 में वो एक हादसे का शिकार होने की वजह से आठवीं कक्षा की परीक्षा नहीं दे पाए. नतीजतन स्कूल ने उनका नाम काट दिया और शोएब को स्कूल छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा. इसके बाद 2 साल तक उन्होंने घर पर ही बिताए. शोएब की जिंदगी में नया मोड़ तब आया जब दिल्ली से एक रिश्तेदार उनके घर आईं. उन्होंने शोएब से पूछा कि क्या वो दिल्ली चलकर पढ़ने के इच्छुक हैं? शोएब फौरन राज़ी हो गए. उनके परिवार ने भी इस फैसले का स्वागत किया. दिल्ली आने पर शोएब की रिश्तेदार ने उन्हें यूथ टेक हब में भर्ती करवाया. फिलहाल शोएब यहां कोचिंग ले रहे हैं. अगले सत्र से वो ओपन स्कूल में दसवीं क्लास में दाखिल होंगे. शोएब इंजीनियरिंग कर रहे अपने दोस्तों से प्रेरित हैं और उन्हीं के नक्शे–कदम पर चलना चाहते हैं।

शिवानी: 15 साल की शिवानी दिल्ली के कुसुमपुर पहाड़ी इलाके में तीन बहनों के साथ रहती हैं. साल 2011 में उनके पिता टीबी की बीमारी से चल बसे थे. जनवरी 2017 में उनकी मां का भी निधन हो गया. वो लंबे वक्त से बीमार चल रही थीं. मां को इलाज के लिए बार–बार अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ता था. इस वजह से स्कूल में शिवानी की हाजिरी पूरी नहीं हो पाती थी. फरवरी में मां के देहांत के बाद जब वो स्कूल गईं तो स्कूल प्रशासन ने उन्हें कक्षा में बैठने की इजाजत नहीं दी. शिवानी के पास पढ़ाई छोड़ने के अलावा कोई चारा नहीं था. लेकिन उनकी बड़ी बहनों ने हिम्मत नहीं हारी और उन्हें बोर्डिंग स्कूल भेजा. शिवानी टीचर बनना चाहती हैं और अपने छात्रों को प्यार से पढ़ाना चाहती हैं।

हमारे बारे में

ये पैनल वंचित तबकों के कुल 13 बच्चों को मिलाकर बनाया गया था. इन लड़के–लड़कियों में दलित, मुस्लिम, हिंदू, इसाई और झुग्गियों में रहने वाले परिवारों के सदस्य शामिल थे. इन सभी को अलग–अलग कारणों से स्कूल छोड़ना पड़ा था. नीचे दिया गया वर्ड क्लाउड (word cloud) पैनल के सदस्यों की पहचान और रुचियों पर प्रकाश डालता है.

पैनल के सदस्यों का मौजूदा शिक्षा–स्तर

निम्नलिखित तालिका में पैनल के सदस्यों की शैक्षणिक योग्यता का ब्योरा दिया गया है. इन बच्चों ने अपने नाम के आगे दिये कॉलमों में संबंधित जानकारी को रेखांकित किया है. उनसे पूछे गया था कि क्या वो कभी स्कूल नहीं गये हैं या फिर उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ा था? उन्होंने किस कक्षा तक पढ़ाई पूरी की है? क्या उन्होंने दोबारा स्कूल में भर्ती होने की कोशिश की है? अगर हां, तो क्या उन्हें इस काम में सफलता हासिल हुई?

नाम/वजहें	कभी स्कूल नहीं गए?	स्कूल छोड़ना पड़ा?	किस कक्षा में स्कूल छूटा?	दोबारा स्कूल गए या नहीं?	दोबारा भर्ती होने में कामयाब?
अमन	X	√	9वीं	X	X
शिवानी	X	√	9वीं	X	X
संजना	X	√	9वीं	X	X
आशीष	X	√	9वीं	X	10वीं
आज़ाद	X	X	X	X	X
करन	X	X	10वीं	X	
शोएब	X	√	9वीं	X	छठी
अरमानी	X	X	X	X	X
भरत	X	√	9वीं	X	10वीं
सिम्मी	X	√	11वीं	X	10वीं
एकता	X	√	8वीं	X	X
मंजूर	X	√	9वीं	X	X
भवानी	X	√	9वीं	X	ओपन

नोटः 13 में से 5 बच्चे ओपन स्कूल के जरिये दोबारा स्कूली सिस्टम का हिस्सा बने हैं।

हमारे दोस्तों की शिक्षा का स्तर

पैनल के सदस्यों से उनके इलाके में रहने वाले हमउम्र बच्चों की शिक्षा के बारे में पूछा गया. निम्नलिखित तालिका में उनके उत्तर दर्ज हैं.

नाम/ वजहें	**कभी स्कूल नहीं गए?**	**स्कूल छोड़ना पड़ा?**	**किस कक्षा में स्कूल छूटा?**	**दोबारा स्कूल गए या नहीं?**	**दोबारा दाखिला मिला या नहीं?**
अमन	X	√	पहली	X	X
साहिल	X	√	9वीं	X	X
राजा	X	√	छठी	X	X
शिवानी	X	√	दूसरी	X	X
नदीम	X	√	पांचवीं	X	X
राहुल	X	√	आठवीं	X	X
राहुल	X	√	पांचवीं	X	पांचवीं
मालती	X	√	9वीं	X	X
राजू सिंह राजपूत	X	√	9वीं	X	X
मेहनाज़	X	√	11वीं	X	12वीं
शिवानी	X	√	9वीं	√	9वीं
वंदना	X	√	9वीं	X	X
मनोज	X	√	9वीं	X	X

नोटः इनमें से 3 बच्चे ओपन स्कूलिंग सिस्टम के जरिये दोबारा शिक्षा हासिल कर रहे हैं।

स्कूल छोड़ने और दोबारा दाखिला ना लेने की वजहें

बच्चों के स्कूल छोड़ने के लिए जिम्मेदार कुछ मुख्य वजहें नीचे गिनाई गई हैं. इन वजहों को बच्चों ने खुद रेखांकित किया है. इन्हें महत्ता के क्रम में पेश किया गया है।

आप स्कूल में भर्ती क्यों नहीं हुए?	
कारण	**प्रतिक्रिया देने वाले बच्चों की संख्या**
पारिवारिक पृष्ठभूमि	10
कुसंगति	10
रोजगार	11
खराब आर्थिक हालात	6
घरेलू परेशानियां	8
स्कूल ने वापस लौटाया	9
पलायन	3
स्कूल का खराब माहौल	6
पढ़ाई में दिलचस्पी नहीं	9

आपने स्कूल क्यों छोड़ा?	
कारण	**प्रतिक्रिया देने वाले बच्चों की संख्या**
घरेलू समस्याएं	9
स्कूल का माहौल और सहपाठियों का बर्ताव	9
स्कूल/अध्यापक पसंद नहीं थे	8
भेदभाव	8
परीक्षा में नाकामी	8
स्कूल ने दाखिला नहीं दिया	9
काम	8
हादसा	3

हमारी आवाज़

"हर बच्चे को क्लास में बराबरी का हक नहीं दिया जाता. दलित बच्चों को पीछे रखा जाता. गुप्ता या शर्मा के बच्चों को आगे बिठाया जाता है।"

"टीचर हम पर ध्यान नहीं देती तो हम क्यों दें?"

"स्कूल में बारहवीं तक फीस माफ हो।"

"लड़की के हेयर स्टाइल पर ज्यादा ध्यान देते हैं. टीचर कहते हैं– "अरे! कैसे बाल हैं तुम्हारे?" इस वजह से सुंदर लड़कियां धीरे–धीरे स्कूल आना बंद कर देती हैं।"

"मां–बाप बच्चों पर प्रेशर नहीं डालते कि बच्चे स्कूल जाएं।"

"जो बच्चे अच्छे हैं पढ़ाई में, उन्हें सामने रखा जाता है।"

"समाज की भी जिम्मेदारी है कि वो विद्यालयों पर ध्यान दें।"

"बच्चों के हिसाब से टीचर होने चाहिएं. ऐसा नहीं कि 50 बच्चे हों और एक टीचर हो।"

"घरवाले लड़कियों को ट्यूशन नहीं जाने देते।"

"घर परेशानी से काम करना होता है और पढ़ने में मन नहीं लगता।"

"टीचर और स्कूल हमें नहीं समझेंगे. हमें उन्हें समझाना पड़ेगा।"

"टीचर कहते हैं कि ये भंगियों का बच्चा है।"

"टीचर बच्चे के कलर के ऊपर बोलते थे, "काली सी लड़की को खड़ा करो।"

"दाखिला करने में डॉक्यूमेंट्स मांगते हैं और कहते हैं अभी जगह नहीं है।"

"8–10 साल का बच्चा गांव से यहां आकर काम कर रहा है।"

"अगर स्कूल में पता चले कि बच्चा पहले फेल हुआ है तो वो मना करते हैं।"

"मेरे घर में मेरी मां कहती है क्यों पढ़ोगी?"

"वाल्मीकि समाज से टीचर हैं तो वो अलग बैठते हैं. दूसरे टीचर उनसे बात नहीं करते हैं।"

"स्कूल वापस जाने पर वैसे भी वापस फेल होना याद दिलाएंगे।"

हमारी मांगें:

- हमसे आवास के पते का प्रमाण ना मांगा जाए.
- प्रवासी परिवारों के बच्चों को दाखिले से सिर्फ इसलिए वंचित ना रखा जाए क्योंकि उनके पास सभी दस्तावेज़ मौजूद नहीं हैं.
- स्कूल बच्चों को सक्रियता से शिक्षा के अधिकार कानून की जानकारी दें. बच्चों को इस कानून के प्रावधानों से वाकिफ करवाया जाए.
- बच्चों को उनके अधिकारों की जानकारी आसान भाषा में दी जाए.
- स्कूल छोड़ने वाले बच्चों के ब्योरे के लिए टीचर सर्वेक्षण करें और ड्रॉपआउट की वजहें जानने की कोशिश करें.
- सभी स्कूल जाति, लिंग, धर्म, शारीरिक अक्षमता, सामाजिक और आर्थिक आधार पर भेदभाव से मुक्त हों.
- कक्षाओं में बच्चों के बैठने की व्यवस्था गोलाकार या अर्ध–गोलाकार तरीके से हो.
- प्रत्येक 30 बच्चों पर 1 अध्यापक के अनुपात को हर स्कूल में लागू किया जाए.
- अध्यापक सुनिश्चित करें कि बच्चों को उनके मानसिक स्तर के मुताबिक शिक्षा दी जाए.
- स्कूल छोड़ने वाले छात्र–छात्राओं के लिए खास ट्रेनिंग की सुविधा हो. इससे वो दोबारा स्कूली व्यवस्था से जुड़ पाएंगे. ओपन स्कूल बंद किये जाएं.
- निजी स्कूलों में आर्थिक रूप से कमज़ोर तबकों के बच्चों को मिलने वाले आरक्षण का कड़ाई से पालन हो.
- अध्यापन का काम दोस्तना माहौल में होना चाहिए ताकि बच्चों की दिलचस्पी कायम रहे.

Supported by

European Union PRAXIS CENTRE FOR SOCIAL EQUITY AND INCLUSION CSEI ऑक्सफैम इंडिया OXFAM India